Date - 11-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Shankara's Conception of Maya.

Scanned with CamScanner

माया - सिद्धान्त

माया ईश्वर की शक्ति है। ईश्वर अपनी इस माया शक्ति के माध्यम से इस नाना नानारूपात्मक जगत् का निर्माण करता है।

माया अनिर्वचनीय है। माया सत् नहीं है क्योंकि कालान्तर में ब्रह्म-ज्ञान से इसका बाध हो जाता है। माया असत् भी नहीं है क्योंकि यह ब्रह्म पर जगत् को प्रक्षेपित करती है। माया को असत्यात्मक मानना आत्मा व्याघाती होगा।

शंकराचार्य के अनुसार माया या अविद्या की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

(1) माया का आश्रय और विषय दोनों ब्रह्म है। परन्तु जिस प्रकार जादूगर अपने जादू के प्रभाव से अछूता रहता है।

Scanned with CamScanner

उसी प्रकार ब्रह्म की माया से प्रभावित नहीं होता।

(ii) माया सांख्य की प्रकृति के समान जड़-रूप और भौतिक है। परन्तु वह सांख्य की प्रकृति के सदृश सत् और स्वतंत्र नहीं है।

(iii) माया ब्रह्म का विवर्त है। यह ~~भाषा~~ आभास मात्र है। माया के कारण ब्रह्म जगत् के रूप में आभासित होता है।

(iv) माया अनादि परन्तु सान्त है। ज्ञान से इसका अन्त किया जा सकता है।

(v) माया भावरूप है परन्तु वह सत् नहीं है, क्योंकि ब्रह्म ही एकमात्र सत् है।

(vi) माया अध्यास रूप है। इसके द्वारा हमें एक वस्तु में दूसरी वस्तु का आभास होता है।

माया की दो शक्तियाँ हैं — (i) आवरण शक्ति (ii) विक्षेप शक्ति। अपनी आवरण शक्ति के द्वारा माया ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को ढक देती है। अपने विक्षेप शक्ति के द्वारा माया ब्रह्म के स्थान पर नानात्मक जगत को प्रक्षेपित करती है।

Scanned with CamScanner

माया और अविद्या

शंकराचार्य के दर्शन में माया और अविद्या समानार्थक है, पर बाद के वेदान्तियों ने माया और अविद्या के मध्य भेद किया है। ये भेद इस प्रकार है –

(1) माया ब्रह्म की भावात्मक शक्ति है जबकि अविद्या अभावात्मक (Negative) शक्ति है। माया विश्व को प्रदर्शित करने के कारण भावात्मक है जबकि अविद्या ज्ञान के अभाव को संकेत करने के कारण अभावात्मक है।

(2) माया ईश्वर की उपाधि (condition) है, किन्तु अविद्या जीव की उपाधि है।

(3) माया में सत्वगुण की प्रधानता है, पर अविद्या में तमोगुण की प्रधानता है।

Scanned with CamScanner